चन्द तारा गुलाब तेरे न

शेरजग गर्ग

त प्रकाशन, मसूरी

प्रथम संस्करण १९६८
मूल्य चार रुपये

प्रकाशक
सीमान्त प्रकाशन
मसूरी

●

मुख पृष्ठ
छाया : ब्रह्मदेव
कला : योगेन्द्र कुमार लल्ला

●

मुद्रक
हरबचन सिंह
सीमान्त प्रहरी प्रेस, मसूरी.

कविता-क्रम

भावुकतावश

•

भावुकतावश मन ने तुम पर
शत-शत श्रद्धा सुमन चढ़ाये
तुम निर्मम पाहन निकलोगे
यह मन को मालूम नहीं था।

प्रीत-प्रणय के रूप नगर की
हर मुख से तारीफ सुनी थी
त्यागा था इसलिए राजपथ
बिन मंजिल की राह चुनी थी
तुमने ऐसा लोभा, सारे
चाँदी के तोहफे ठुकराये
तुम खोटे कञ्चन निकलोगे
यह मन को मालूम नहीं था।

तुमको सौ-सौ बार बुलाया
पर न मिले सपनों से ज्यादा,
तुमने सचमुच खूब निबाही
छलने वालों की मर्यादा,
आना देख तुम्हें स्वागत में
अगणित मेघ मल्हार सुनाये
तुम सूखे सावन निकलोगे
यह मन को मालूम नहीं था।

हर आशा की एक उमर है
उससे अधिक नहीं जी सकती
इसीलिए नादान प्रतीक्षा
हर पल अश्रु नहीं पी सकती
मैं तो केवल आया तुम तक
पाने मुस्कानों के साये
तुम वीरान चमन निकलोगे
यह मन को मालूम नहीं था ।

युग गीत

•

सौ-सौ प्रतीक्षित पल गए
सारे भरोसे छल गए
किरणें हमारे गाँव में
खुशियाँ नहीं लाईं ।

महका नहीं मुरझा हृदय
चहकी नहीं कुछ ताज़गी,
मानी नहीं, मानी नहीं
पतझार की नाराज़गी
मरते रहे खपते रहे
प्रतिकूल धारों में बहे
लेकिन सफलता दो घड़ी
मिलने नहीं आई ।

अपना समय भी खूब है
भोला सृजन जाये कहाँ
हमदर्द तो स्वाधीन है
ईमान पर पहरा यहाँ
यों इस क़दर प्रतिरोध पर
जग युद्ध के गतिरोध पर
नाराज़ बिल्कुल भी नहीं
नादान तरुणाई ।

पर गुदगुदी होगी नहीं
छायी रहे कितनी गमी
हर एक युग के बाद भी
जीवित रहेगा आदमी
हर लड़खड़ाते गान को
गिरते हुए ईमान को
अक्षर किसी दिन थाम लेंगे
प्रेम के ढाई !

जीते हैं

•

सारे समूचे रख आए हैं ताक पर
हम सूने आँगन-से
धूल ढके दर्पण-से
जीते हैं।

एक वक्त गुज़र गया
अपने से बात नहीं कर पाए,
मरने का मिलना अवकाश नहीं
हम ऐसे जीवन से भर पाए,
यों ही दुर्घटना से घटे-हुए
सारे संदर्भों से कटे हुए
जीते हैं।

जड़ता से जकड़ा है कुछ ऐसे
अब केवल मृत्युबोध होता है,
दोनों को हाथ नहीं आने में
लगता है, यह अनिश्चय होता है,
अपने से ही अद्भुत भागा-से
जाने किस आस या दुराशा से
जीते हैं!

युद्ध : एक परिकल्पना

•

लड़ते हैं आपस मे देश
लड़ते हैं आपस में लोग
किन्ही व्यापक सत्यों की रक्षा के लिए
किन्हीं महान आदर्शों को
जीवित देखने की कामना मे,
कौन देश है जिसने
युद्ध के दौरान
मात्र सत्य का सहारा लिया हो,
धर्म को वरा हो ?
चाहे 'शत्रु' बेचारा कितना खरा हो !
जहाँ निहत्थे अभिमन्यु को
धुरधरो ने घेर लिया था
क्या वह धर्मयुद्ध नही था ?
धर्मयुद्ध में मैंने
मंदिरों, मस्जिदों, गिरजाघरों,
हस्पतालों और जेलों को जलते हुए देखा है !
क्या इसी का नाम है धर्म ?
क्या इसी का नाम है युद्ध ?

रात मैंने सपने में देखा था स्वयं को
पागल के रूप में
जो संसार के विवेकशील पुरुषों को
सलाह दे रहा था—
'सारे महाद्वीपो
सारे देशो
सारे लोगो !
तुम सब एक तरफ होकर
युद्ध-धर्म से लड़ो
धर्म-युद्ध से लड़ो
एक-दूसरे को अपनी ही फौज का
सिपाही समझकर
युद्ध में लड़ते हुए कुर्बान होजाओ।'

किन्तु यह कौन-सा सपना है
जो टूटा नहीं है ?
और मैं सोच रहा हूँ—
नींद बहुत बेहतर है
ऐसे जग जाने से।

मुस्कराए हम बरायेनाम

•

देखकर बनती बिगड़ती भाग्य की तस्वीर
मुस्कराये हम बरायेनाम कितनी बार !

चाँदनी के घाव पुर पाये नहीं अब तक
दामिनी के दर्प की बाकी निशानी है
पाँव जो रुकना नहीं सीखे पड़ावों पर
सिर्फ लम्बे रास्तों की मेहरबानी है

भोर का विश्वास उठ पाता नहीं मन से
हो चुकी है यों डगर में शाम कितनी बार !

दर्द बेदर्दी हमारी चाह क्यों समझे
उम्र सारी काट दी है इंतजारों मे
चंद लमहे जिंदगी के थे, मगर वे भी
कुछ खयालों में बिताये, कुछ पुकारों में

देहरी ने जब कहा, किस की प्रतीक्षा है
ले नहीं पाये किसी का नाम कितनी बार !

छान आए गम हजारों पनघटों की खाक
प्यास ने दामन मगर छोड़ा न अधरों का
रह गए संयम बिचारे अब विफल होकर
टूटना अब नव रहा है बाँध नज़रों का

मरघटों की गोद में पनघट मरीची प्रीत
कर चुकी होकर विवश आराम कितनी बार !

भरोसा

•

पिघल कर ही रहेगा एक दिन पत्थर,
दृगों के नीर पर इतना भरोसा है !

लिए अरमान दिल में बढ चली नौका
मगर तूफान ने मझधार में टोका
मिलन ऐसी घड़ी में भी नहीं मुश्किल
तरी को तीर पर इतना भरोसा है !

मिलन की जिन्दगी से दूर है दोनो
विरह की वेदना मे चूर हैं दोनो
हृदय जिससे बधे हैं दो, न टूटेगी
प्रणय-जंजीर पर इतना भरोसा है !

करो में मैं उठाये एक मूरत हूँ
कि फिर फिर देख लेता मुग्ध सूरत हूँ
कहूँ तो चित्र में भी प्राण आजायें
मुझे तस्वीर पर इतना भरोसा है !

सदा संघर्ष करता हूँ मुसीबत से,
हजारों आफतों की क्रूर हरकत से,
अजी, तकदीर खुद ही मुस्करायेगी,
मुझे तदबीर पर इतना भरोसा है !

एक नन्हा-सा उजाला

•

आज यह बीहड़ अँधेरी रात
पथ खामोश
रुक गया रथ कल्पनाओं का
विकट पगडंडियों पर
प्राण पर परतें व्यथाओं की
हजारों जम गई हैं,
और खुशियाँ छोड़ कर यह देश
जाने कौन दुनिया रम गई है !
यह अँधेरा भी नहीं अपना
नया-सा, अजनबी-सा लग रहा है
किन्तु, ऐसे में
बहुत नजदीक इस दिल के
एक नन्हा-सा उजाला जग रहा है !
जो निरंतर राह को मेरी
हठीली मंज़िलों तक खींचता है
यह तभी बढ़कर जगाता है
कि जब विश्वास आँखें मींचता है ।

जिजीविषा

•

सहचर है कोई तो
इन अंधी गलियों में
क्या होगा दर्द से उबरने के बाद ?

कभी कभी लगता है
केवल आकाशहीन खण्डहर है मेरा मन
जिसे नहीं परस सकी
कोई भी स्वर्ण किरण
युगों पूर्व आया था
एक चित्रकार यहाँ
चला गया,
रंग शोख भरने के बाद ।
सहचर है कोई तो... ...

तो क्या यह बुझा बुझा जीवन भी
त्याग दूं
अपनी ही सांसों का
पोंछ मैं सुहाग दूं

एक राष्ट्रीय कविता

•

नेताओं ने ले ली है जान
सारे देश की
पूरे नहीं करते हैं वादे !
गलती से सच बोलते हैं
शेखचिल्ली के दादे।

आदमी का दिल

•

जब आग के आँसू सूख जाते हैं
आदमी का दिल मजबूत हो जाता है
फिजूल की आहटों से नहीं जागता
दर्द कुछ ऐसे सो जाता है ।

जिन्दगी

•

बेवजह जी रहे हैं, यह सच है
और जीने में लुत्फ खास नहीं :
मौत को ही गले लगा लें, पर
जिन्दगी इस कदर उदास नहीं।

जान-पहचान

•

रोज शीशे में देख लेते हैं,
नाज करती हुई निगाहों से ;
जान-पहचान हो गई शायद
अजनबी-अजनबी गुनाहों से ।

•

मुझे छूटे हुए साहिल की खुशामद न हुई,
मुझसे रूठी हुई मंजिल की खुशामद न हुई,
दर्द की गोद में कुछ पीर भी जी लेता मैं
पर मेरे दिल से ही कातिल की खुशामद न हुई।

(दृष्टांत)

पराजय

•

आज हर दाँव हार बैठे हम
मैं भी सह लूँगा, तुम भी सह लेना,
मैं भी खुश रह सका तो रह लूँगा
तुम भी खुश रह सको तो रह लेना।

(तैनाग)

क्यों पथिक ?

•

क्यों पथिक तुमको डगर का दल असुन्दर लग रहा है ?
जो कि इक वरदान है वह दुख असुन्दर लग रहा है !
जिन्दगी ग़मग़ीन है, माना, मगर रोना बुरा है—
मुस्करा भी दो तुम्हारा मुख असुन्दर लग रहा है !

किस्मत

•

कब तलक यों ही रुलायेगी मुझे किस्मत,
नाउमीदी में डुबायेगी मुझे किस्मत,
हाथ से मैंने मिटा दी भाग्य की रेखा—
अब भला कैसे मिटायेगी मुझे किस्मत ?

२८

(गंगीग)

मृत्युबोध

•

चाह है आज इस क़दर बेज़ार,
लगता हो ज्यों मौत का रोगी ;
दर्द की कुछ दवा तो कर लूँ पर
क्या यही ख़ुदकुशी नहीं होगी ?

गज़ल

•

तुम्ही मिल गए हो डगर के बहाने,
किनारा मिला है भवर के बहाने।

टहलते टहलते हुए पार कर लीं
कई मंजिलें हमसफर के बहाने।

पिघलने लगा है, बदलने लगा है,
किसी का हृदय चश्मेतर के बहाने।

सुना जबकि तुम याद करते हो हमको
हुए बेखबर इस खबर के बहाने।

गज़ल

०

हो गए बेवफ़ा यहाँ तक तुम,
खोलते अब नहीं जुबां तक तुम,

ऐसी क्या बात है जो मुश्किल से
कह नहीं पा रहे हो हाँ तक तुम।

मेरी नजरों ने तुमको देखा है
मुझको आये नजर जहाँ तक तुम

लो, समझ लो ये प्यार जिद्दी है
दिल को ठुकराओगे कहाँ तक तुम

मेरी बदनामियों में पाओगे,
अपनी शोहरत की दास्ताँ तक तम।

--

गज़ल

•

हो गए बेवफ़ा यहाँ तक तुम,
बोलते अब नहीं जुबां तक तुम,

ऐसी क्या बात है जो मुश्किल से
कह नही पा रहे हो हाँ तक तुम ।

मेरी नज़रों ने तुमको देखा है
मुझको आये नजर जहाँ तक तुम

लो, समझ लो ये प्यार जिद्दी है
दिल को ठुकराओगे कहाँ तक तुम

मेरी बदनामियों में पाओगे
अपनी शोहरत की दास्ताँ तक तुम ।

पिछले दिन

•

कुछ ऐसे गुजर गये
पिछले दिन

कभी नहीं जुड़ पायें, जैसे
स्वप्निल सम्पर्क
अपने ही सत्यों पर वार करें
ज्यों अपने तर्क,
द्वार पर उमीदों के
लिखा हुआ हो, मानों
नामुमकिन !

कुछ ऐसे गुजर गए
पिछले दिन !

([illegible])

क्या करे कोई

•

प्रेरणा की शक्ति जब बन जाय दुर्बलता,
क्या करे कोई ?

जब बहारें भी दिखें अंगार-सी जलती
बागबानों की न जब हो एक भी चलती
त्याग दे जब फूल अपनी निज कोमलता,
क्या करे कोई ?

मानते मनुहार से कब हैं हठीले मीत,
लाख अपनापन मिटादें नेह गीले गीत,
किन्तु फिर भी इस हृदय पर वश नहीं चलता,
क्या करे कोई ?

चाहता है मन भुलादे अनहुई बातें,
सह सका है कौन अपनों की कुटिल घातें,
प्रीत का पर्याय है रंगीन असफलता,
क्या करे कोई ?

मुझे आदर्शों के [illegible]
फिर सब दुनिया की आंखों में
हारे हुए
सपनों की तरह
अपने दिल में दफन होजाएंगे,
मुझे मालूम है !

भावुक और अव्यावहारिक समझकर
प्रेमिका अपना इरादा बदल लेगी
और अखबार में छपवायेगी विज्ञापन
किसी दुनियादार आदमी के लिए,
मुझे मालूम है !

उदास गलियाँ हों, या
अपरिचय की गाँठों को
मजबूत करता हुआ महानगर
सबमें मिलती है
मनुष्य के बजाय
मनुष्य की पैरोडी
कविता के नाम पर भजन
या फिर
कोकशास्त्र
लिखने वाले
हवा में उछाल रहे हैं शब्द-अपशब्द
मुझे मालूम है !

प्रार्थना करना मात्र खामखयाली है
पर मैं जानता हूँ
मेरे समानधर्मा मेरी तरह
प्रार्थनाओं में लीन हैं
तथा ये प्रार्थनाएं
ईश्वर से नहीं
मनुष्य से की जारही हैं
और मनुष्य होता है
होता था
वह भविष्य में भी होगा
मुझे मालूम है !

गरीबी कहीं कहीं है
पर बेईमानी कहाँ नहीं है ?
गोदामों में भरा पड़ा है अनाज
दूकानों में गलत तराजू और बाट रखे हैं ।
गलियों और बाजारों में
नयी पीढ़ी के छोकरे
कालिज और स्कूल जाती लड़कियों पर
आवाज़ें कसने में मशगूल हैं ।
नींद की गोलियां खाकर
दफ्तरों में सोये पड़े हैं लोग
पचास करोड़ की आबादी में
हर दूसरा आदमी नेता है ।
सारा का सारा देश सजग है
हर व्यक्ति जागरूक है
अपना बैंक-बैलेंस बढ़ाने के मामले में;
लोग आज़ादी की परवा न करने के लिए
आज़ाद हैं ।

नियति

•

मैं जहर नहीं खा पाता
मैं गीत नहीं गा पाता
तब या तो एक दिन
हो जाऊँगा पागल
या
बहुत बहुत नार्मल ।

नटखट प्रिया से

•

हर स्वप्न भीगे गीत को
तुमने मिटाया
ओ' सुनाया ज़िंदगी को
विषपगी तन्हाइयों का मर्सिया
तुमने बहुत अच्छा किया !

ताज़े गुलाबों की महक पर
जान देना भूल थी
जीवन सुखद रोमांस है
यह मान लेना भूल थी
होता रहा, होता रहा
हर काम अपना अनकिया
तुमने बहुत अच्छा किया !

कागज़ पड़े हैं कुछ बहुत नज़दीक
किंतु विचित्र से
प्यार था तुमको
बहुत मुझसे
यही लगता तुम्हारे पत्र से
पर की समझदारी बड़ी तुमने
हृदय जिसमें मिले केवल
उस अनूठे प्यार को तुमने अमर बतला दिया
नटखट प्रिया
तुमने बहुत अच्छा किया !

नहीं

करते रहे हैं
जिसे दूर से नमस्कार
आज उस युद्ध के मरघटों में
भेंट कर दिये हैं
शत्रु ने सैकड़ों टैंक
दर्जनों विमान
हजारों सिपाही
अकारण नहीं है यह सारी तबाही
इसकी जिम्मेदार है
फौजी तानाशाही।
जिसे समझना है कि
शांति के अग्रदूत पर
मनुष्यता के सबसे बड़े संरक्षक पर
जनतंत्र के सबसे पुष्ट उदाहरण पर
युद्ध और डाकाजनी के दुश्मन पर
आक्रमण करना
कितना महंगा पड़ता है।
हिंदुस्तान का हरेक सिपाही
शांति की शान के लिए
मनुष्य के मान के लिए
और सिर्फ ईमान के लिए
आखिरी साँस तक लड़ता है।

आखिरी सांस तक (एक युद्ध कविता)

o

बुद्ध, अशोक और गांधी के देश ने
एक बार फिर
सम्भाल लिया है
मजबूर होकर
युद्ध का मोर्चा।
कश्मीर के सुरम्य प्रदेश में
धधक उठी हैं
केसर की क्यारियां
आगया है तूफान डल झील में
श्रीनगर में महकने वाले
करोड़ों फूल
सोचते हैं,
काश, हम काँटे होते !

उससे बड़ा अन्यायी, और
जनतंत्र का हत्यारा
कौन होगा,
जो भोले बालकों की किलकारियों को
चिंगारियाँ बनने के लिए मजबूर कर दे,
नारियों की सारी कोमलता दूर कर दे
वृद्धों को क्रूर करदे,
जवानी को सिर्फ
जहाजों, तोपों, टैंकों, मशीनगनों और
शत्रु की लाशों के सपने दिखाई दें ;
निरीह नागरिकों को आधी रात के वक्त
साइरन सुनाई दें ;
कारखानों में महज़

बम बारुद और फौलाद ढलने लगे
सारी-की सारी जिंदगी
मौत की ओर चलने लगे !

करते रहे है
जिसे दूर से नमस्कार
आज उस युद्ध के चरणों मे
भेंट कर दिये हैं
शत्रु के सैकड़ो टैंक
दर्जनो विमान
हजारो सिपाही
अकारण नहीं है यह सारी तवाही
इसकी जिम्मेदार है
फौजी तानाशाही।
जिसे समझना है कि
शांति के अग्रदूत पर
मनुष्यता के सबसे बडे सरक्षक पर
जनतंत्र के सबसे पुष्ट उदाहरण पर
युद्ध और डाकाजनी के दुश्मन पर
आक्रमण करना
कितना महंगा पड़ता है,
हिंदुस्तान का हरेक सिपाही
शांति की शान के लिए
मनुष्य के मान के लिए
और सिर्फ ईमान के लिए
आखिरी सांस तक लड़ता है।

मोहभंग का गीत

•

व्यर्थ तुम्हारे प्रणय-निवेदन
मौन-मुखर सारे संबोधन
मत दोहराओ आज प्यार का तुम मुरदा इतिहास।

बन न सकेगा, बन न सकेगा
दो तिनकों का नीड़;
इसको तितर बितर कर देने
चली आ रही भीड़;
बचने की कोशिश मत करना
संभवत: पड़ जाये मरना
यही नियति है मित्र हमारी, होना नहीं उदास।

व्यावहारिक संसार और
इसका विलोम है प्यार,
इन्द्रधनुष के रंगों जैसा
कोई नही उदार;
किसी सत्य का हाथ थाम लो,
सपनों का हरगिज न नाम लो,
कर पाओ तो मोहभग में सुख की करो तलाश।

प्यार

•

तिमिर निगल जाता है,
शुभ्र दमक लाता है,
जीवन मे दूधिया जुन्हाई-सा प्यार।

सपनों की सीमा में
साधों का कर थामे
मंजिल तक लाता तरुणाई-सा प्यार।

दर्द के समर्पण को
मौत के निमन्त्रण को
टाल टाल जाता हरजाई-सा प्यार।

विश्व रूठ जाये तो
श्वास टूट जाये तो
पर्वत से टकराया राई-सा प्यार।

आधुनिक मुमताज़ के प्रति

●

शायद तुम प्रेमिका नही, मुमताज हो।
और तुम्हें उस शाहजहाँ की तलाश है,
जिसने प्यार के नाम पर
ताजमहल का नाम धर
एक खूबसूरत इमारत खड़ी कर दी।
जिसने प्यार कम किया
दिखावा करोड़ गुना
किन्तु प्रेम में जिसने
संघर्ष का काम तो क्या, नाम भी नही सुना।
हां, तुम्हें उसी शाहजहाँ की तलाश है।
तुम्हे हीर का रांझा नही चाहिए
जो अपनी प्रियतमा के वियोग में
जोगी बन कर गली-गली
मारा-मारा फिरा।
क्योंकि तुम हीर हो ही नही
जिसने सब-कुछ ठुकरा कर
रांझा का नाम जपते-जपते
जहर पी लिया था।
बस, तुम्हें तो शाहजहाँ चाहिए
जो तुम्हारे मन से पहले
ताजमहल को तामीर करादे
और तुम्हें उसके प्यार का यक़ीन हो जाए।
पर मुझे तुमसे बेहद हमदर्दी है
काश ! तुम्हारी ख्वाहिश पूरी हो सकती।

शोर करें

•

यह जो इन कमरों में चुप्पी है
हर कोना फण उठाये बैठा है
लगता है दीवारें एक दिवस
कस लेंगी अपनी ही बाँहों में
मेरा व्यक्तित्व अभी
मेरा अस्तित्व अभी
आओ मन
इसको कमज़ोर करें !
शोर करें !

वे जो ऐय्याशी के झूले में
झूल रहे हैं
सुविधा में फूल रहे हैं
जिनको महसूस नहीं होतीं
सच्चाइयां
रोज खोदते हैं जो
जीने की खाइयां
उन्हीं मुर्दा लोगों को
थोड़ा-सा सत्य दिखा
बोर करें !
शोर करें ...!

(विशेष)

विरोधाभास

•

मेरी आशा
नही देती किसी को
झूठा दिलासा
 इसलिए निराश है !

मेरी भाषा
बहुत ज्यादा
आमफहम है
 इसलिए खास है !

मेरी तृप्ति
पहचानती है
दूसरों के सूखे होठ
 इसलिए प्यास है !

मेरी खुशी
सिर्फ मेरी नही है
समय के प्रति प्रतिबद्ध है
 इसलिए उदास है !

कविता क्लर्क की

•

पहले और अब मे
आ गया है काफी फ़र्क
पहले मैं बेकार था
अब बन गया हूं क्लर्क।
अफसर तक बुरा नही लगता
हो गया है रुचि-परिवर्तन
कल पूछ रहा था मैं अपने मन से—
क्या होता है मन ?
शाम को लोग जाते हैं घूमने—
कनाटप्लेस या बुद्ध जयंती पार्क
इंडिया गेट या पिक्चर हाल
कुछ खेलते है बाली बॉल
शायद इनके दिमाग मे भरा है
भूसा है गत्ता।
मैं तो पांच बजे के बाद
करूंगा केवल काम याद
और ले ले कर स्वाद
बनाऊंगा समयोपरि भत्ता।

विरोधाभास

•

मेरी आशा
नहीं देती किसी को
झूठा दिलासा
इसलिए निराश है !

मेरी भाषा
बहुत ज्यादा
आमफहम है
इसलिए खास है !

मेरी तृप्ति
पहचानती है
दूसरों के सूखे होंठ
इसलिए प्यास है !

मेरी खुशी
सिर्फ मेरी नहीं है
समय के प्रति प्रतिबद्ध है
इसलिए उदास है !

मुझपर अभियोग

o

तुम केवल कायर हो
मुर्दा हो प्राणयुक्त
वक्त ने लगाया है मुझ पर अभियोग,
मैं यहाँ दुराशा के कमरे में बंद पड़ा
मना रहा अपने मर जाने का सोग।

बडी-बड़ी योजनाए
बडे-बडे नाम
दूर से चुभाते हैं
किंतु पास जाने पर
नंगे दिख जाते हैं,
वितृष्णा.......वितृष्णा
अपने से वितृष्णा
जीवन से विष्तृणा
डसता है गहरे में मृत्युमुखी रोग।

कुछ नही किसी से भी कहना है
करनी है सिर्फ आज
अपने से बात,
शायद फिर इससे ही
नए-नए अर्थ लगें हाथ,
इसके अतिरिक्त और चारा क्या
जहाँ किया करते हों लोग
झूठ, झूठ ...झूठ
सिर्फ झूठ के प्रयोग।

चांदनी रात और याद

८

मोतियों से आच्छादित
अम्बर का फूल
जूड़े में सजाये हुए
बेपनाह जवान रात में
अपने से बात किए जाना ।

अलसायी देह और
अधसोये नयन लिये
अंगड़ाई ले लेकर संभलना
और संभल संभलकर अंगड़ाना ।

मुझपर अभियोग

o

तुम केवल कायर हो
मुर्दा हो प्राणयुक्त
वक्त ने लगाया है मुझ पर अभियोग,
मैं यहाँ दुराशा के कमरे में बंद पड़ा
मना रहा अपने मर जाने का सोग।

बडी-बड़ी योजनाएं
बडे-बड़े नाम
दूर से चुभाते हैं
किंतु पास जाने पर
नंगे दिख जाते हैं,
वितृष्णा......वितृष्णा
अपने से वितृष्णा
जीवन से विष्तृणा
डसता है गहरे में मृत्युमुखी रोग।

कुछ नहीं किसी से भी कहना है
करनी है सिर्फ आज
अपने से बात,
शायद फिर इससे ही
नए-नए अर्थ लगें हाथ,
इसके अतिरिक्त और चारा क्या
जहाँ किया करते हों लोग
झूठ, झूठ ...झूठ
सिर्फ झूठ के प्रयोग।

स्वगत कथन

•

सोचने-समझने का चक्कर बेकार
बकवास !
क्यों डूबे हो खयालों में, सोच में
एक बात दिमाग खोलकर सुन लो
(फिर चाहे सिर धुन लो)

तुम जिनके बारे में
सोच-सोचकर परेशान हो;
जिसका अधः पतन तुम्हें सालता है;
जिनकी पीडाओं का भागीदार बनना
तुम अपने जीवन का लक्ष्य मानते हो
वे तुम्हें बेवकूफ समझते हैं !

जिनके विषय मे सोचने मे
तुम्हारे मस्तिष्क की शिरायें
हर समय तनी रहती हैं
उन्होने, हाँ उन्होने ही
अपने चिन्तन पर तालाबदी कर रखी है
आखिरी बार सिर्फ
अपने बारे में सोचो—
क्या तुम्हारे सिर पर
अब भी किसी पैगम्बर का भूत सवार है ?

(१९६८)

घर से घर तक

•

सारी दिनचर्या उलझी डगर डगर में

पौ फटी, और ताजा अखबार संभाला
अनमने हृदय से हर अक्षर पढ़ डाला
पर नहीं मिला अपनापन किसी खबर में।

मुंह धोया अथवा हफ़्तों बाद नहाये
डालडा लगे दो एक परांठे खाये
पत्नी से बोले, लेकिन बोल न पाये
फिर निकल पड़े हम मीलों बड़े शहर में।

आफिस में पहुँचे और हाज़िरी भरदी
की इधर उधर जाकर आवारा गर्दी
कुछ से बोले है आज ग़ज़ब की सर्दी
पर नहीं तनिक भी मिली कहीं हमदर्दी
जब टूट न पाई अब किसी क़ीमत पर
तब अफसर को ही डांट दिया दफ्तर में।

छुट्टी करके तब टी-हाऊस में आये
यारों के साथ बैठकर कुछ बतियाये
पर खुल कर एक ठहाका लगा न पाये
थे आस पास कुछ मनहूसों के साये
तो लौट आये हम मुंह लटकाये घर में।

स्वगत कथन

•

सोचने-समझने का चक्कर बेकार
बकवास !
क्यों डूबे हो ख्यालों में, सोच में
एक बात दिमाग खोलकर सुन लो
(फिर चाहे सिर धुन लो)

तुम जिनके बारे में
सोच-सोचकर परेशान हो;
जिनका दुख पतन तुम्हें सालता है,
जिनकी पीड़ाओं का भागीदार बनना
तुम अपने जीवन का लक्ष्य मानते हो
वे तुम्हें बेवकूफ समझते हैं।

जिनके विषय में सोचने में
तुम्हारे मस्तिष्क की शिरायें
हर समय तनी रहती हैं
उन्होंने, हाँ उन्होंने ही
अपने चिन्तन पर तालाबंदी कर रखी है
आखिरी बार सिर्फ
अपने बारे में सोचो—
क्या तुम्हारे सिर पर
अब भी किसी पैगम्बर का ऋण सवार है

(१६-७७

कमज़ोरी

•

कुछ लोग हैं
जो मेरे मित्र हो सकते थे
पर मैं उनके स्वार्थ में
शरीक नहीं हो सका।

कुछ गुण हैं
जिन्हें मैं आसानी से पा सकता था
पर जिनके लिए मैं अपना
निजत्व नहीं खो सका।

पर यह तो कमज़ोरी है
जो मेरी है
जिसे समय का गंगाजल भी
नहीं धो सका।

और भी बहुत से कुछ हैं
जिनके कारण
दुनिया दम तोड़ रही है
और मेरी कमज़ोरी मुझे
करोडों की भीड में
अकेला छोड़ रही है।

अवसर

•

हमारी जिन्दगी में
गुदगुदी करने के
कई अवसर आये हैं
और हमने उन्हें टाल दिया है
क्योंकि हम अवसरवादी नहीं हैं।

लौट गई याद

•

आ-आकर लौट गयी याद
कई बार
इतना तो था न कभी
प्यार समझदार

फाइल के पन्नों में
बंदी कर दिल-दिमाग
जब घर पर आये
देखी मनहूस धवल दर्पण में
केवल मुस्काये
कोशिश कर सोये तो
दिखे कई सपने बीमार
आ-आ कर लौट गई याद
कई बार

अरसे से
प्राणों के गमले में
खिले नहीं हैं गुलाब
जैसे कालेज के जमाने में
पढ़ी हुई
भूल गये हो किताब
निर्मम हो जाती है कोमलता
समयानुसार
आ-आकर लौट गयी याद
कई बार
इतना तो था न कभी
प्यार समझदार

लौट गई याद

०

आ-आकर लौट गयी याद
कई बार
इतना तो था न कभी
प्यार समझदार

फाइल के पन्नों में
बंदी कर दिल-दिमाग
जब घर पर आये
देखी मनहूस शक्ल दर्पण में
केवल मुस्काये
कोशिश कर सोये तो
दिखे कई सपने बीमार
आ-आ कर लौट गई याद
कई बार

अरसे से
प्राणों के गमले में
खिले नहीं हैं गुलाब
जैसे कालेज के जमाने में
पढ़ी हुई
भूल गये हों किताब
निर्मम हो जाती है कोमलता
समयानुसार
आ-आकर लौट गयी याद
कई बार
इतना तो था न क